श्रद्धांजलि

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।2.27।।

जो पैदा हुआ उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत का जन्म निश्चित है। इस (जन्म-मरण-रूप परिवर्तन के प्रवाह) का परिहार अर्थात् निवारण नहीं हो सकता। अतः इस विषय में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिये।

डा. आर. के. मिश्रा

यह जीवंत मुस्कान अब हम कभी नहीं देख पाएंगे।

सुरुचिपूर्ण वेषभूषा और सदैव मुस्कुराते हुए डा आर के मिश्रा का दिनांक 20-01-2021 को रात्रि 08:30 बजे देहांत हो गया।

मेरे अनुज समान मित्र एवं सहकर्मी डा राजेश मिश्रा लखनऊ मेडिकल कालेज के 1972 बैच के MBBS थे और सफल अस्थिरोग विशेषज्ञ रहे। उन्होने बलरामपुर अस्पताल और श्यामा प्रसाद मुखर्जी अस्पताल में कुशल आर्थोपेडिक सर्जन के रूप में ख्याति प्राप्त करने के बाद वह सी एम एस जिला अस्पताल बहराइच के बाद कानपुर के उर्सुला अस्पताल के डायरेक्टर रहे। सेवानिवृत्ति के बाद भी डा मिश्रा लखनऊ के एक मेडिकल कालेज में शिक्षण कार्य के साथ आर्थोपेडिक सर्जन के रूप में अंत तक कार्य करते रहे। वह हर हफ्ते अपने ग्रामीण इलाके में फ्री मेडिकल सेवा कर निःशुल्क दवाएं भी उपलब्ध कराते रहे। डा राजेश उत्तर प्रदेश आर्थोपेडिक सर्जन्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट रहे और अपनी विशेषज्ञता में लाइफ टाइम आचीवमेंट का सम्मान भी प्राप्त किया।

अति व्यस्त होते हुए भी मेरे व्यक्तिगत आग्रह से डा राजेश 'अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा' से भी जुड़े और उसमे भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। डा मिश्रा के प्रयासों से सभा का सम्मान बढ़ा। दूसरे वर्ष ही सभा ने इनके योगदान के कारण इन्हें सभा के उपाध्यक्ष पद से सम्मानित किया।

जैस गीता में कहा है- वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।2.22।।

मनुष्य जैसे जीर्ण-शीर्ण पुराने कपड़ों को छोड़कर दूसरे नये कपड़े धारण कर लेता है, ऐसे ही देही पुराने शरीरों को छोड़कर दूसरे नये शरीरों में चला जाता है।

इसी प्रकार क़ैसर जैसे रोग से जीर्ण हुए शरीर को यह पुण्यात्मा छोडकर चली गयी।

हम सब सुहृद, मित्र और उनके सहकर्मी प्रार्थना करते हैं कि डा राजेश कि आत्मा को शांति और उनके परिवार व कुटुंबियों को यह आघात सहने कि शक्ति प्रदान करे।

** ॐ शांति **